पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली

खण्ड–XXIX अंक–09 15 मई, 2024

वर्णानामर्थसंघाना रसानां छन्दसामपि। मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।

अक्षरों, अर्थसमूहों, रसों, छन्दों और मंगलों की करने वाली सरस्वती जी और गणेश जी की मैं वन्दना करता हूँ।

–श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI//2024/270734 दिनांक 30.04.2024 के अनुसार **प्रो. हेमन्त कुमार कुंडू** ने 23.04.2024 से संस्थान के भौतिकी विभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड-I) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. हेमन्त कुमार कुंडू को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2024/270582 दिनांक 29.04.2024 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) मिश्रिया शेख अली** ने 15.04.2024 से संस्थान के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2024/272034 दिनांक 02.05.2024 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) ज़ोहरा बातुल** ने 29.04.2024 से संस्थान के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-II/2024/273244 दिनांक 07.05.2024 के अनुसार **श्री मनीष कुमार** ने 26.04.2024 से संस्थान के शैक्षिक प्रौद्योगिकी सेवा केन्द्र (E.T.S.C.) में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–6 में प्रोडक्शॅन मैनेजर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-II/2024/274418 दिनांक 09.05.2024 के अनुसार **श्री निजाम हुसैन** ने 18.04.2024 से संस्थान के केन्द्रीय पुस्तकालय में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–6 में वरिष्ठ पुस्तकालय सूचना सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 131वीं जयन्ती उत्सव संपन्न

संस्थान में बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 131वीं जयन्ती उत्सव के अवसर पर 12 अप्रैल से लेकर 16 अप्रैल, 2024 तक जय भीम सप्ताह मनाया गया। पहले दिन 12 अप्रैल, 2024 को संस्थान में पीतमपुरा रक्तदान केंद्र के माध्यम से सामूहिक रक्तदान कैंप लगाया गया, जिसमे कैंपस समुदाय ने भाग लिया और लगभग 200 से अधिक विद्यार्थियों और कर्मचारियों ने रक्तदान किया। इसी दिन डोगरा हॉल में ''The Perfect Student'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमे यूनिवर्सिटी ऑफ ओटागो, न्यूजीलैंड की प्रो. मारिया कोलोंबो एवं आई.आई.टी. दिल्ली के प्रो. यशपाल जोगदंड ने ''छात्रों द्वारा कॉलेज के समय में विभिन्न चुनौतियों को किस प्रकार हल किया जाये और जीवन में सफलता कैसे प्राप्त की जाये'' इस विषय पर कार्यशाला आयोजित की। 13 अप्रैल, 2024 को डोगरा हॉल में हिंदी फिल्म "kala" का फिल्मांकन किया गया जिसमें फिल्म कलाकार रजनीकांत द्वारा अभूतपूर्व सामाजिक विषय पर दलितों के संघर्ष के लिए आवाज उठाई गयी। 14 अप्रैल, 2024 को भारतीय संसद में बाबा साहब अम्बेडकर की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करने के लिए दो बसों द्वारा संसद भवन जाने का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें संस्थान के विद्यार्थियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। तत्पश्चात इसी दिन लेक्चर हॉल काम्प्लैक्स में विभिन्न कक्षाओं में विद्यार्थियों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और विद्यार्थियों के अभिभावकों को प्रोत्साहित करने के लिए भी चित्रकला प्रतियोगिता का विशेष आयोजन किया गया। इसमें लगभग 200 विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों ने भाग लिया। चित्रकला प्रतियोगिया में प्रत्येक श्रेणी के प्रथम 3 विजेताओं को मुख्य कार्यक्रम में

सुन्दर उपहार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की श्रृंखला में 15 अप्रैल, 2024 को सेमिनार हॉल में शाम को मशहूर नाट्य संस्था 'अस्मिता थिएटर' के संचालक श्री अरविन्द गौड़ और मशहूर कलाकार सावेरी श्री गौड़ और साथी कलाकारों द्वारा नाटक 'अम्बेडकर एंड गाँधी' का सुंदर मंचन किया गया। नाटक के समापन के पश्चात उपस्थित लोगों द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब नाट्य संस्था के संचालक श्री अरविन्द गौड़ ने दिए। सभी ने नाटक की विषय वस्तु और कलाकारों के सुंदर अभिनय की प्रशंसा की।

डॉ. अम्बेड़कर जी की जयंती पर जय भीम सप्ताह के मुख्य और समापन कार्यक्रम का आयोजन 16 अप्रैल, 2024 को सेमिनार हॉल में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में एस.के.एम.यू. की पूर्व कुलपति सोनाझरिया मिंज को आमंत्रित किया गया था। समारोह में मुख्य अतिथि के अलावा संस्थान के निदेशक प्रो. रंगन बनर्जी, उपनिदेशक प्रो. टी.आर. श्रीकृष्णन, अनुसूचित जाति और जनजाति प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रो. प्रवीण पी. इंगोले, प्रो. यशपाल जोगदंड, (ODI Cell) ने उपस्थित श्रोताओ को सम्बोधित किया। कार्यक्रम में केंद्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा डॉ. अंबेडकर के विषय में निबंध सुनाया गया और सामूहिक नाटक की प्रस्तुति ने कार्यक्रम की सुंदरता में चार चाँद लगाए।

मुख्य समारोह का सफल संचालन सुश्री नोवे और श्री टिकेन्द्र ने किया। जय भीम समारोह के अन्य कार्यक्रमों में ही संस्थान के केन्द्रीय पुस्तकालय द्वारा डॉ. अम्बेडकर से संबंधित पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। संस्थान प्रांगण में विशेष पुस्तक मेले का भी आयोजन किया गया और भारतीय संविधान की प्रस्तावना विषय पर प्रिंटिंग स्टॉल लगायी गयी जिसमे सभी लोगों को भारतीय संविधान की प्रस्तावना की प्रिंटेड प्रति मुफ्त में भेट की गयी। 16 अप्रैल, 2024 की शाम को आयोजन समिति द्वारा 'इंटिग्रिटी कैंडल मार्च' का आयोजन किया गया; जिसमें संस्थान के विद्यार्थियों, कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों द्वारा सम्पूर्ण संस्थान परिसर में कैंडल मार्च किया गया और सभी ने देश के संविधान और एकता और अखंडता के लिए प्रार्थना की।

इस प्रकार, बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर की 131वीं जयंती पर आयोजित जय भीम सप्ताह का आयोजन एक भव्य और सफल प्रयास रहा और सभी ने कार्यक्रमों की रुपरेखा और प्रस्तुतियों के लिए आयोजन समिति और आयोजन में शामिल टीम के सभी सदस्यों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

रिपोर्टः–
(अनुसूचित जाति और जनजाति प्रकोष्ठ)
भा.प्रौ.सं दिल्ली

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले कागजात

1 सामान्य आदेश / General Orders
2 संकल्प / Resolution
3 परिपत्र / Circulars
4 नियम / Rules
5 प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन / Administrative or other reports
6 प्रेस विज्ञप्तियाँ / Press Release/Communiques
7 संविदाएँ / Contracts
8 करार / Agreements
9 अनुज्ञप्तियाँ / Licences
10 निविदा प्रारुप / Tender Forms
11 अनुज्ञा पत्र / Permits
12 निविदा सूचनाएँ / Tender Notices
13 अधिसूचनाएँ / Notifications
14 संसद के समक्ष रखे जाने वाले / प्रतिवेदन तथा कागज पत्र / Reports and documents to be laid before the Parliament

राजभाषा हिन्दी के अनुसार राज्यों का वर्गीकरण

क्षेत्र क– बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र।

क्षेत्र ख– गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।

क्षेत्र ग– खंड (1) और (2) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र।

राजभाषा नियम 1976 नियम 5

राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर आवश्यक रूप से हिंदी में दिया जाना अनिवार्य है। अतः सभी विभाग / केन्द्र / अनुभाग / प्रकोष्ठ / एकक आदि के अध्यक्षों से अनुरोध है कि हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों का उत्तर केवल हिंदी में दें और उनका रिकॉर्ड रखें।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY DELHI

प्रशासनिक अधिकारियों के दैनिक सरकारी कामकाज में सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त होने वाली संक्षिप्त आदेशात्मक टिप्पणियाँ

(Brief important notings being used by Administrative Officers in their daily routine official work)

अंग्रेजी	हिन्दी
Action may be taken as proposed.	यथाप्रस्तावित कार्रवाई की जाए
All concerned should note carefully.	सभी संबंधित व्यक्ति इसे ध्यान से नोट कर लें।
Application is rejected.	प्रार्थना-पत्र अस्वीकृत किया जाता है।
Approved.	अनुमोदित।
Approved as a very special case. This should not, however be Quoted as a precedent.	एक विशेष मामला मानते हुए अनुमोदित किया जाता है किन्तु आगे उदाहरण के रूप में इसका उल्लेख न किया जाए।
Wait further report.	आगे और विवरण की प्रतीक्षा कीजिए।
Await reply.	उत्तर की प्रतीक्षा करें।
Do the needful.	आवश्यक कार्रवाई करें।
Draft is concurred in.	प्रारूप पर सहमति दी जा रही है।
Draft may not be issued.	अब प्रारूप जारी करने की आवश्यकता नहीं है।
Draft reply on the lines suggested above may be Put up.	उपरोक्त सुझावों के आधार पर उत्तर का मसौदा तैयार कीजिए।
Enquire into the case and report early.	मामले की जांच करें और शीघ्र रिपोर्ट दें।
Enquiry be completed and its report submitted at an Early date.	जांच पूरी की जाए और रिपोर्ट जल्दी प्रस्तुत की जाए।
Explanation may be called for.	स्पष्टीकरण मांगा जाए।
Fix a date for meeting.	बैठक के लिए तारीख नियत करें।
Give top priority to this work.	इस कार्य को परम अग्रता दें।
I agree.	मैं सहमत हूं।
I agree with 'A' above.	मैं उपर्युक्त 'क' से सहमत हूं।
I disagree.	मैं सहमत नहीं हूं।
I fully agree with office note.	मैं कार्यालय की टिप्पणी से पूर्णतया सहमत हूं।
Inform accordingly.	तदनुसार सूचित किया जाए।

अंग्रेजी	हिन्दी
Issue as amended.	यथासंशोधित जारी किया जाए।
Issue reminder urgently.	तुरन्त अनुस्मारक भेजिए।
Issue today.	आज ही भेज दिया जाए।
Issue warning.	चेतावनी दी जाए।
Kindly see it for approval.	कृपया इसे अनुमोदन के लिए देखें।
May file.	फाईल कर दिया जाए।
No assurance in the matter can be given at this stage.	इस मामले में इस समय कोई आश्वासन नहीं दिया जा सकता है।
Order may be issued.	आदेश जारी कर दिया जाए।
Office may note it carefully.	कार्यालय इसे सावधानी से नोट कर लें।
Permitted.	अनुमति दी जाती है।
Please circulate and file.	कृपया सभी को दिखाकर फाइल कर दें।
Please discuss.	आकर चर्चा कर लें।
Please fleg the relevent papers.	कृपया संगत कागजातों पर पर्चियाँ लगा दें।
Please issue necessary notification.	कृपया आवश्यक अधिसूचना जारी करें।
Please make a special note of this Decision.	कृपया इस निर्णय को विशेष रूप से नोट करे।
Please prepare a precis of the case.	कृपया मामले की संक्षेपिका तैयार करें।
Please put up a self contained note.	कृपया स्वतः पूर्ण टिप्पणी प्रस्तुत करे।
Please remind after one week.	कृपया एक सप्ताह बाद याद दिलाएं।
Please see the preceding notes.	कृपया पिछली टिप्पणियाँ देख लें।
Please speak.	कृपया बात करें।
Please take immediate action.	कृपया तुरंत कार्रवाई करें।
Put up through proper channel.	उचित माध्यम से प्रस्तुत करें।

चित्त की एकाग्रता

हमारा निजी व्यवहार हो या परमार्थ का कार्य बिना चित्त की एकाग्रता के सफलता मिलना बहुत कठिन है। यदि चित्त एकाग्र रहेगा, तो फिर सामर्थ्य की कभी कमी नहीं पड़ेगी

आचार्य विनोबा भावे का चिंतन....।

ध्यान योग में तीन बाते मुख्य हैं–चित्त की एकाग्रता, जीवन की परिमितता और सम–दृष्टि। इन सब बातों के बिना सच्ची साधना नहीं हो सकती। चित्त की एकाग्रता का अर्थ है चित्त की चंचलता पर अंकुश रखना। जीवन की परिमितता का अर्थ है, 'सब क्रियाओं का नपा–तुला होना। सम–दृष्टि का अर्थ है, विश्व की ओर देखने की उदार दृष्टि। सबसे महत्वपूर्ण है चित्त की एकाग्रता। किसी भी काम में यह आवश्यक है। व्यावहारिक बातों में भी चित्त की एकाग्रता चाहिए। यह बात नहीं कि व्यवहार में अलग गुणों की जरूरत है और परमार्थ में अलग। व्यवहार को शुद्ध करने का ही अर्थ है परमार्थ। कैसा भी व्यवहार हो, उसकी सफलता और असफलता आपकी एकाग्रता पर अवलंबित है। व्यापार, व्यवहार, शास्त्र–शोधन, राजनीति, कूटनीति किसी को भी लीजिए, इनमें जो कुछ सफलता मिलेगी, वह चित्त की एकाग्रता के अनुसार मिलेगी। नेपोलियन के बारे में कहा जाता है कि जहां वह युद्ध की व्यवस्था को एक बार ठीक कर लेता था, उसके बाद समर–भूमि में गणित के सिद्धांतों को हल किया करता। डेरों–तंबुओं पर गोले बरसते, सैनिक मरते, परंतु नेपोलियन का चित्त अपने गणित में ही मग्न रहता। मैं यह नहीं कहता कि नेपोलियन की एकाग्रता बहुत बड़ी थी। उससे भी ऊंचे दर्जे की एकाग्रता के उदाहरण दिए जा सकते हैं। खलीफा उमर की भी ऐसी ही बात कही जाती है। बीच लड़ाई में जब नमाज का वक्त हो जाता, तो वे वहीं समर–भूमि में चित्त एकाग्र करके घुटने टेककर नमाज पढ़ने लगते थे और उनका चित्त इतना एकाग्र हो जाता था कि उन्हें यह होश भी न रहता कि किसके आदमी मर रहे हैं।

एक फकीर था। उसके शरीर में तीर घुस गया। इससे उसे बड़ी वेदना हो रही थी। लोग तीर खींचने की कोशिश करते, तो हाथ लगाते ही वेदना और बढ़ जाती थी। वह तीर निकालना बड़ा मुश्किल हो गया। आज की तरह क्लोरोफार्म जैसी बेहोश करने की दवा भी नहीं थी। बड़ी समस्या खड़ी हो गई। कुछ लोग उस फकीर को जानते थे। वे आगे आकर बोले तीर अभी मत निकालो। यह फकीर नमाज पढ़ने बैठेगा, तब निकाल लेंगे। ऐसा ही हुआ। नमाज के वक्त फकीर का चित्त इतना एकाग्र हो गया कि तीर निकाल लिया गया और उसे पता भी न चला। इसे कहते हैं एकाग्रता।

व्यवहार हो या परमार्थ, चित्त की एकाग्रता के बना सफलता मिलना कठिन है। यदि चित्त एकाग्र रहेगा, तो फिर सामर्थ्य की कभी कमी न पड़ेगी। साठ वर्ष के बूढ़े होने पर भी किसी नौजवान की तरह आपसे उत्साह और सामर्थ्य दिखाई पड़ेगा। होना यह चाहिए कि मनुष्य ज्यों–ज्यो बुढ़ापे की ओर बढ़े, त्यों–त्यों उसका मन अधिक मजबूत होता जाना चाहिए। फल को ही देखिए। पहले वह हरा होता है, फिर पकता है, फिर सड़ता है, गलता है और मिट जाता है, परंतु उसका भीतर का बीज उत्तरोत्तर बड़ा होता जाता है। यह बाहरी शरीर सड़ जाएगा, गिर जाएगा, परंतु बाहरी शरीर फल का सार–सर्वस्व नहीं है। उसका सार–सर्वस्व, उसकी आत्मा तो बीज है। यही बात शरीर की है। शरीर भले ही बूढ़ा होता चला जाए, परंतु स्मरण–शक्ति तो बढ़ती ही रहनी चाहिए। परंतु ऐसा होता नहीं। उम्र बढ़ने से स्मरण–शक्ति कम होती जाती है। तुम्हारा जो ज्ञान, विद्या या स्मृति है, वह तुम्हारा बीज है। शरीर बूढ़ा होने से ज्यों–ज्यों ढीला पड़ता जाए, त्यों–त्यों आत्मा बलवान होती जानी चाहिए। इसके लिए एकाग्रता ही आवश्यक है।

एकाग्रता तो चाहिए, लेकिन वह कैसे हो? उसके लिए क्या करना चाहिए ? गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं, आत्मा में मन को स्थिर करके यह संभव है। न किंचिदपि चिंतयेत–दूसरा कुछ भी चिंतन न करें। परंतु यह सधे कैसे ? मन को बिल्कुल शांत करना बड़े महत्व की बात है। विचारों के चक्र को रोके बिना एकाग्रता होगी कैसे? बाहरी चक्र तो किसी तरह रोक भी लिया जाए, परंतु भीतरी चक्र तो चलता ही रहता है। चित्त की एकाग्रता के लिए ये बाहरी साधन जैसे–जैसे काम में लाते हैं, वैसे–वैसे भीतर का चक्र अधिक वेग से चलने लगता है। आप आसन जमाकर तनकर बैठ जाइए, आंखे स्थिर कर लीजिए। परंतु इतने से मन एकाग्र नहीं हो पाता। मुख्य बात यह है कि मन के चक्र को चलने से बंद करना ही साधना है।

बाहर का यह अपरंपार संसार, जो हमारे मन में भरा रहता है, उसको बंद किए बिना एकाग्रता साधना कठिन है। अपनी आत्मा की अपार ज्ञान–शक्ति हम बाह्य क्षुद्र वस्तुओं में खर्च कर डालते हैं, लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए। जिस तरह दूसरे को न लूटते हुए स्वयं अपने प्रयत्न से धनी बनने वाला व्यक्ति आवश्यकता के बिना खर्च नहीं करता, उसी तरह हमे भी अपनी आत्मा की ज्ञान शक्ति क्षुद्र बातों के चिंतन में खर्च नहीं करनी चाहिए। यह ज्ञान–शक्ति हमारी अमूल्य थाती है, परंतु हम उसे स्थूल विषयों में खर्च कर डालते हैं। यह साग अच्छा नही बना, इसमें नमक, कम पड़ा ? तनिक–सा कम पड़ा। इस 'महान' विचार में ही हमारा सारा ज्ञान खर्च हो जाता है। जो ज्ञान परमेश्वर की प्राप्ति करा सकता है, उसे हम साग–सब्जी के जायके की चर्चा में खो देते हैं।

गीता में श्रीकृष्ण ने चित्त की एकाग्रता के लिए इस तरह बैठो, इस तरह आंखे रखो, इस तरह आसन जमाओ आदि सूचनाएं नहीं दीं, ऐसी बात नहीं। परंतु इन सबसे लाभ तो तभी होगा, जब पहले चित्त की एकाग्रता के लिए हम गंभीर हो।

मनुष्य के चित्त में पहले यह जम जाए कि चित्त की एकाग्रता आवश्यक है, फिर तो मनुष्य खुद ही उसकी साधना और मार्ग ढूंढ़ निकालेगा।

साभार–दैनिक जागरण
दिनांक 1.5.2013

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com